www.pdgroup.in
E-mail : publisher@pdgroup.in
वर्ष 35 अष्टम् अंक
मार्च 2022

सामान्य ज्ञान दर्पण

इस अंक में...

7 सम्पादकीय
9 समसामयिक सामान्य ज्ञान
15 आर्थिक परिदृश्य
19 राष्ट्रीय परिदृश्य
25 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य
30 क्रीड़ा जगत्
33 अनुप्रेरक युवा प्रतिभा
35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य
36 विज्ञान समाचार
37 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
40 सारभूत तत्व कोष

लेख

43 **समसामयिक लेख**—(i) वैश्विक नवाचार सूचकांक 2021 में भारत 46वें स्थान पर
44 (ii) जरूरी था बाँध सुरक्षा कानून
46 **सामयिक लेख**—(i) भारत में स्टार्टअप परितंत्र
47 (ii) ऊर्जा संरक्षण की चुनौती
48 **श्रद्धांजलि लेख**—सेना के अपराजेय योद्धा थे बिपिन रावत
49 **धरोहर लेख**—आध्यात्मिक पाठ्यक्रम एक नई पहल
50 **राजकीय सहायता लेख**—जीवाश्म ईंधन सब्सिडी
52 **वन- संरक्षण लेख**— मैंग्रोव क्षरण से गहराता पारिस्थितिकी संकट
54 **नदी-जल प्रबंधन लेख**—कृषि-औद्योगिक विकास का आधार बनेगी केन-बेतवा नदी लिंक परियोजना
56 **स्वास्थ्य लेख**—अच्छे मस्तिष्क-अच्छी स्मरण शक्ति के लिए कुछ उपाय
58 **कृषि लेख**— औषधीय व सुगंधित पौधों की जैविक विधि से खेती
60 कॅरियर सलाह

हल प्रश्न-पत्र

62 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय (चरण-I) परीक्षा, 2020
71 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) लेवल (टियर-I) परीक्षा, 2020
80 राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा, 2021
99 राजस्थान पी.एस.सी. पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा, 2021
105 छत्तीसगढ़ प्री.बी.एड. परीक्षा, 2021

मॉडल हल प्रश्न-पत्र

112 आगामी उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा आयोजित लेखपाल मुख्य परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
119 आगामी उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग द्वारा आयोजित स्वास्थ्य कार्यकर्ता (महिला) मुख्य परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

124 **वर्षांत समीक्षा 2021 :** आयुष मंत्रालय
126 ज्ञान वृद्धि कीजिए
128 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

सम्पादकीय

निष्ठा के रसायन द्वारा सफलता का मार्ग प्रशस्त कीजिए

''कठोर परिश्रम, प्रतिबद्धता और निष्ठा के साथ कुछ भी असम्भव नहीं है.

– सर ब्रायन

कर्म से बढ़कर कर्ता का स्मारक कुछ नहीं हो सकता है. कहा जाता है किसी को चाम प्यारा नहीं होता है, हरेक को काम प्यारा होता है. हम भी उसी को चाहते हैं जो पूरी लगन के साथ, पूरी निष्ठा के साथ काम करता है. पिता उसी पुत्र को प्यार करता है जो सच्चे मन से उसकी सेवा करता है, अफसर उसी कर्मचारी को निकट बुलाता है जो पूरी सच्चाई के साथ काम करता है. वस्तुतः जीवन में उन्नति करने का एकमात्र मंत्र है निष्ठापूर्वक कर्त्तव्यों का निर्वहन करना.

महान् पुरुषों की स्मृति को बनाए रखने के लिए भक्तजन अथवा प्रशंसक स्मारक बनाते हैं, परन्तु विचारणीय यह है कि जिनके स्मारक नहीं हैं, क्या उनको लोग याद नहीं करते हैं? मंदिर संस्कृति का विकास बहुत बाद में हुआ, परन्तु श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि राष्ट्र पुरुषों के रूप में युगों पूर्व प्रतिष्ठित हो चुके हैं. तुलसी, शैक्सपीयर आदि के जन्म समय एवं जन्म-स्थान आज तक विवाद का विषय बने हुए हैं, उनके स्मारक खड़े करने का रिवाज कुछ ही वर्ष पुराना है, परन्तु वे जनता के कण्ठहार पिछली पाँच शताब्दियों से बने हुए हैं. ये स्मारक कब तक सुरक्षित रहेंगे, यह कोई नहीं कह सकता है, परन्तु श्रीराम, श्रीकृष्ण, वाल्मीकि, शैक्सपीयर, तुलसी, सूर, गांधी, सुभाष आदि के योगदान सर्वदा सुरक्षित रहेंगे. उनकी कीर्ति सदा सर्वदा अक्षुण्ण बनी रहेगी. द्रष्टा की दृष्टि पहले कर्म पर जाती है, तब स्मारक की ओर जाती है और अंत में कर्म पर आकर टिक जाती है. वस्तुस्थिति यही है कि कर्म से बढ़कर कर्ता का स्मारक क्या हो सकता है?

कुछ लोगों की याद को बनाए रखने के लिए स्मृति-ग्रन्थ प्रकाशित किए जाते हैं, कुछ लोग अपने अभिनंदन ग्रन्थ प्रकाशित कराते हैं, कुछ व्यक्तियों के चित्र सभा-भवनों में टाँगे जाते हैं. ये सब यही घोषित करते हैं कि अमुक व्यक्ति की सामर्थ्य इतनी ही थी और अब उसके विकास का– आत्मविकास का मार्ग अवरुद्ध हो गया है.

स्मारक-परम्परा एवं संस्कृति को देखकर हमें एक बहुत पुरानी कहानी की याद आती है. एक मेढक ने भगवान विष्णु के दरबार में जाकर निवेदन किया–मैंने तीन फीट ऊँची छलांगें लगाई हैं. लोग मेरा स्मारक नहीं बना रहे हैं, आप बनवाने की कृपा करें. भगवान का संकेत पाकर दो पार्षद मेढक को एक कुएँ के पास ले जाकर बोले–जरा इसमें झाँकिए तो सही. यह देखकर मेढक को सुखद आश्चर्य हुआ कि उसके द्वारा 2 फीट ऊँची छलांगें लगाने के उपलक्ष्य में कुएँ में स्मारक बना हुआ था. भगवान विष्णु उससे कह रहे थे–स्मारक हमारी सीमाओं के द्योतक हैं. हमारी सफलताएं एवं सम्भावनाएं असीम हैं. हमें अपना काम पूरी निष्ठा एवं सामर्थ्य के साथ करते रहना चाहिए. सफलताएं मिलती जाएंगी, स्मारक झूँठे पड़ते जाएंगे. आपके कर्मों के यश का विस्तार होता जाएगा. तब से लेकर आज तक मेढक पूरी सामर्थ्य के साथ छलांगें लगाता रहता है.